

denen ihre Feinde nachgestellt haben, an der dritten durch verstellt. — 8) उपकृतं verbunden mit: धर्मोपकृते देशे Suçr. 1, 88, 3. सैन्धवोपकृतं 166, 20. जाङ्गलोपकृतं 2, 436, 2. अर्थोपकृतं वाक्यम् R. 5, 69, 15. — Nicht recht klar ist die Bed. von उपकृतं Mālav. 20. — Vgl. उपदधि, ०धा, ०धान, ०धानीय, ०धि, ०धेय.

— अन्वप nach oder zu Jmd anlegen, — auflegen TS. 5, 2, 2, 2. अन्व-काम् 4, 2, 1. इष्टकाः Çat. Br. 6, 2, 2, 28. 29. 8, 2, 2, 2. 7, 2, 5. med.: चितिम् 2, 2, 3.

— अभ्युप hinzusetzen, hinzulegen: शिख्यम् TS. 5, 2, 4, 3. belegen, zu-decken: ता नेष्टकोपरिष्ठादभ्युपदध्यात् Çat. Br. 8, 7, 1, 2. med. zugleich mit aufsetzen (auf das Feuer) 7, 5, 2, 29.

— प्रत्युप belegen, bedecken: तानिष्टकया पुरस्तात्प्रत्युपदध्यात् Çat. Br. 7, 4, 2, 36.

— तिर्स् s. u. d. W.

— नि 1) niedersetzen, hinlegen, hinstellen, hineinlegen; einsetzen: उर्व्याः पेटा नि दधाति सौनौ RV. 1, 146, 2. (अग्निः) नि यं दधुर्मनूष्यासु विनु 148, 1. 4, 2, 1. नि त्वा दधे वरं आ पृथिव्याः 3, 23, 4. मनुष्या नि धीमहि 5, 21, 1. 6, 13, 15. 8, 19, 17. VS. 13, 49. Çat. Br. 2, 2, 2, 13. नि दधे कस्त-योर्वर्धम् RV. 1, 81, 4. अयं वा भागो निहितः 183, 4. अग्निं खिल्ये नि दधाति देवयुम् 6, 28, 2. इष्टस्य मध्ये अर्द्धतिर्नि धातु नः 10, 11, 2. उरौ लोके नि धीयस्व Ruhe im weiten Raume AV. 18, 2, 20. वरं पितृभ्यो यत्रैना-न्वेत्य निहितान्तरुके VS. 33, 20. नि ते मनो मनसि धाव्यस्मे dein Sinn füge sich in meinen Sinn RV. 10, 10, 3. — Çat. Br. 1, 7, 1, 12. 8, 1, 13. 5, 2, 2, 5. (यत्रास्य पुरुषस्य मृतस्य) अयम् लोहितं च रेतश्च निधीयते über-gehen in, aufgehen in 14, 6, 2, 13. उदीचीनानस्य पेटा निधातात् Ait. Br. 2, 6. Kātj. Çr. 2, 2, 19. 3, 1. कृतादि 15, 7, 18. अश्वस्य शिखं महिष्युपस्थे निधत्ते legt in ihren Schooss Çat. Br. 13, 3, 2, 2. उरःसु पाणीन् Lātj. 2, 11, 20. तस्मै तृणं निदधौ er legte einen Grashalm vor ihm hin Kenp. 19. अनिधयैव तद्रूच्यम् M. 3, 143. R. 3, 60, 21. मृगं भूमौ निधाय Hit. 34, 20. मा निधाः पदं पदव्यां सगरस्य संततेः Ragh. 3, 50. 62. 12, 52. Çic. 1, 13. शिरसि निधानोऽञ्जलिपुटम् Bhārtr. 3, 87. Çik. 103, 17. 69. Pañkāt. 1, 224. Megh. 91. AK. 3, 3, 35. Bhāg. P. 1, 18, 30. 3, 28, 23. Dhūrtas. 92, 5. Bhātj. 3, 35. कौरा निधाय शिरसा R. 2, 30, 21. परेषां निहितं वनम् gela-geret 5, 73, 21. आत्मा गुरुषां निहितोऽस्य ज्ञेताः Çvetāçv. Up. 3, 20. Taitt. Up. 2, 1. Kāthop. 1, 14. ऊनद्विचार्पिकं प्रेतं निदध्युर्बान्धवा वक्तिः। अलंकृत्य प्रुचा भूमौ legen in so v. a. begraben in M. 3, 68. R. 3, 8, 20. स एनां तत आदाय न्यधादौदच्चनोदके Bhāg. P. 8, 24, 19. खदिर्कीलकेन मध्यनिहितेन Pañkāt. 10, 7. 11. 34, 21. Hit. 1, 168. घटे निदधे — अङ्गुली-यकम् Vid. 293. तत्र संधिमतेन्यधुः Rāga-Tar. 2, 105. यस्यमाख्यं निधीयते H. 829. घृतनिधायं (absol.) निहितः = घृतमिव निहितः P. 3, 4, 45. Schol. शङ्खनिहितात्पयसः Çic. 9, 46. वाग्दण्डोऽथ मनोदण्डः कायदण्डस्तथैव च ॥ यस्यैते निहिता बुद्धौ M. 12, 10. निहितार्थं Çvetāçv. Up. 4, 1. Mit अक्षरः नि शङ्कषं शिथिरे धातुमन्तः RV. 7, 71, 5. तिम्रो व्याघ्रो निहिता अक्षरस्मिन् 87, 5. 1, 24, 7. 3, 33, 15. AV. 1, 13, 3. H. 1003. (गजचर्म) तज्ज-लौघेन नीत्वा च समुद्रान्तर्न्यधीयत Kathās. 12, 112. निहितनयना deren Augen gerichtet sind auf (loc.) Megh. 96, v. 1. निदधे प्रतिकारच्छामिव खड्गे दशं मुकुः Kathās. 10, 67. सर्गाय निदधे मनः seine Gedanken richten auf, beschliessen Hariv. 534. इति मनसि निधाय so v. a. so bei sich den-

kend Hit. 87, 13. क्रियाम् Mühe an Etwas wenden: नाद्वये निहिता काचित्क्रिया फलवती भवेत् Hit. Pr. 43. कर्मणि Jmd zu Etwas anstel-len: पृथग्जनोचिते कर्मण्यर्कतो निदधाति यः Rāga-Tar. 3, 212. — 2) nie-derlegen, ablegen, besettigen: नि हेक्का धत्त RV. 1, 171, 1. न्यधाच्छकम् 2, 38, 4. तस्मिन्नेना नि धेतन 10, 37, 12. 1, 30, 12. AV. 3, 23, 1. 5, 21, 1. 12, 1, 30. नि नो उघं धीयते Çat. Br. 13, 8, 1, 4. आयुधानि Ait. Br. 7, 19. Kātj. Çr. 25, 11, 13. — विपाठान्तरधाराश्च धनुर्भिर्निदधुः सह MBh. 4, 168. दिनात्ते निहिते तेजः सवित्रा Ragh. 4, 1. ततो निधाय नगरे मातृः zurücklassend R. Gobr. 2, 126, 1. यशः स्फोटं निधायारुरुहे परं पदम् gros-sen Ruhm zurücklassend Bhāg. P. 4, 21, 7. — 3) niederlegen zur Auf-bewahrung oder um zu verbergen; übergeben, anvertrauen, schenken: अरण्योर्निहितो ज्ञातवेदाः RV. 3, 29, 2. निधीयमानमपंगुलम्पु 10, 32, 6. भूद्वेया लक्ष्मोर्निहितार्थं वाचि 71, 2. गुरुं निधो निहितौ ब्राह्मणस्य AV. 14, 3, 10. निमेषे दधे नि तै दधे VS. 3, 50. पृथग्णि रत्ना दधतौ न्यस्मे RV. 7, 70, 4. अन्वस्मिन्पृथे नि दधाति रेतः 3, 33, 17. ये त्वाया निदधुः काम-मिन्द्र 5, 32, 12. इन्द्रोसोमा पञ्चामास्वर्तर्नि गवाभिर्दधुर्वत्तणासु 6, 72, 4. प्रायणोयस्य निष्कासं निदध्यात् Ait. Br. 1, 11. Kātj. Çr. 7, 5, 16. एतदे मनुष्येषु सत्यं निहितं यच्चतुः Ait. Br. 1, 6. med.: स शैवधिं नि दधिषे विवस्वति RV. 2, 13, 6. AV. 12, 4, 14. आदन् ब्राह्मणेषु 4, 34, 8. 11, 1, 28. 33. Çat. Br. 2, 2, 1, 14. 3, 4, 1. प्रतिगृह्णा नि धत्ते für sich aufbewahren RV. 1, 123, 1. सनेम् नि च धीमहि 17, 6. — वान्निमुषितकं निधाय Daçak. in Benf. Chr. 188, 14. यं तु पश्येन्नधिं राजा पुराणं निहितं क्षितौ M. 8, 38. (शमीम्) तामुपारुह्य नकुलो धनूषि निदधे स्वयम् MBh. 4, 170. यज्ञपा-त्राणि रत्नान्याभरणानि च । न्यदधुः पाण्डवा राजानाम्ने वृषपर्वणः ॥ 3, 11349. R. 2, 31, 31. 5, 32, 31. आचष्ट भवतो देवो निहितो रावणालये 28. 4, 63, 17. Kathās. 10, 109. (इदं धनुः) स्रुचोर्भागे न्यासं न्यदधाद्विदुः R. Gobr. 1, 77, 24. धनम् । कस्ते क्षिप्यदत्तस्य निधाय Kathās. 4, 26. कृदये, मनसि im Herzen verwahren, — tragen, dem Herzen einprägen: कृद-यनिहितैर्लक्ष्णैः Megh. 78. 85. तत्संदेशान्मनसि निहितात् 97. मनसा im Herzen (versteckt) tragen: निधाय मनसा वैरं प्रियं वक्तीह यो नरः Hariv. 1173. मथुराविदशे सूत्रोर्निदधे übergeben Ragh. 13, 36. राघवो निदधे विजयशंसां चापे सीतां च लक्ष्मणे 12, 44. आत्मानं प्रकृतिष्वद्वा निधाय अथ आप्नुयात् sich anvertrauen Bhāg. P. 6, 14, 18. कृदयं प्रेमपेशलम् । निधाय मापि sein Herz schenken Kathās. 22, 74. — 4) niederhalten, zurückhal-ten: सलिलैर्निहितं रजः Guat. 1. इमं तु पशैर्वृत्तस्य बद्धा निधेहि भो-तो न पलायते यया Bhāg. P. 7, 3, 50. — 5) absetzen, schliessen: शनिरा-दयोच्चैर्निदध्यात् Çat. Br. 11, 4, 2, 8. 6. 7. — 6) machen: सत्यं निधातुं (वि०?) निजभृत्यभाषितम् so v. a. bewahrheiten Bhāg. P. 7, 8, 18. — 7) निहित = निरुत tief gesprochen VS. Pañt. 4, 135 in Ind. St. 4, 235. — 8) अनिहित = अव्यवर्कित (nach dem Schol.) VS. Pañt. 3, 29 in Ind. St. 4, 301. Wohl nicht eingefügt, nicht eng verbunden, nämlich durch das Zusammenschmelzen eines vorangehenden zum पूर्वपद gehörigen und eines nachfolgenden Consonanten. — Vgl. निधातव्य ङ्ग, दुर्णिकितै-षिन्. — caus. 1) hineinlegen lassen in: कुम्भेष्वेतानि सीमाक्षेषु निधापयेत् Brhasp. bei Kull. zu M. 8, 250. 251. aufbewahren lassen: प्रणष्टस्वा-मिकं रिक्थं राजा त्र्यब्दं निधापयेत् M. 8, 30. — 2) Jmd einsetzen als: तेषु (वर्षेषु) स्वात्मज्ञानं — निधाप्याधिपतीन् Bhāg. P. 5, 20, 25. — intens., wie es scheint, in der Stelle: ऐन्द्रः प्राणो अङ्गे अङ्गे नि दैद्युदैन्द्रोऽपानो